Feedback

'संवेदना' का यह अंक भी पूर्व प्रकाशित अंकों के समान अपूर्व है, इसमें कोई संशय नहीं। विषयों की उपादेयता, उनके चयन में विविधता, रचनाकारों का उन विषयों का गहन अध्ययन, मनन, निश्चय ही पर्याप्त चिंतन भी, फिर उनको क्रमबद्धता देते हुए लेख का सुचारु बुनावट और गठन एवं उद्धरण देते हुए कथन की प्रमाणपुष्टि आदि बहुत-सी विशेषताएँ पढ़ते हुए ध्यान में आई।

इस सबके लिए बौद्धिक आदि सब प्रकार का परिश्रम लेखक करता है, लेकिन सबका समुचित संपादन करते हुए एक सूत्र में पिरोकर ठीक-ठीक संतुलित रूपाकार देने का काम द्रष्टा संपादक ही कर सकता है। वही योजक है। संतुलन में ही सौन्दर्य है, ऐसी मेरी सुविचारित और दृढ़ धारणा है। सब प्रकार की सभी सामग्री को सामने रखकर सुष्ठु योजना करनेवाला सजग और परिश्रमी संपादक हो तो उसके स्पर्श से सौन्दर्य में निखार आता है। ऐसा योजक संपादक दुर्लभ होता है। कहा भी गया है- **'योजकस्तत्र दुर्लभः'**। ऐसे संपादकों के नाम कम ही मिलेंगे। केवल प्रशंसा नहीं कर रहा हूँ, उक्त कसौटी पर कसकर लिख रहा हूँ कि 'संवेदना' के संपादक मंडल के प्रति मेरा श्रद्धाभाव जाग्रत होता है। उनका अभिनंदन, उन्हें साधुवाद।

एक बात और, ऐसे लेखकों को ढूँढ़ना, उनकी संवेदना और रचनाशीलता को मथकर मक्खन की तरह ऊपर लाना, उनकी लेखकीय शक्ति को जाग्रत करना और यह सब भी बिना बताए,नेपथ्य में रहकर जो कर सकता है, वही प्रेरक संपादक हो सकता है। लेखक मंडल तैयार कर सकने वाले संपादक हिन्दी जगत् में विरले ही हुए हैं।

ललित बिहारी गोस्वामी
सेवानिवृत्त, सहायक प्रोफेसर
पीजीडीएवी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

Wonderful articles!

Congratulations to all authors, Editors and Head of the Institution (Principal) on their sincere efforts to bring varied type of articles included in vol 3 of esteemed magazine "Samvedana".

Best wishes

By Prof. A. K. Pandey
Vice Chancellor,
Mansarovar Global University, MP